कुशा की जड़ में मठ्ठा

तेजपाल सिंह
रा.जं.सं.,रूड़की

कुशा का कांटा पैर में लगा, पैर लहु–लुहान हुआ, बालक घबराया नहीं, फावड़ा उठाया और उसकी जड़ों को खोद डाला, उसकी जड़ों को जला दिया और खोद–खोद कर मठ्ठा डाल दिया। दोबारा होने की संभावनाएं ही समाप्त कर डालीं। ऐसा दृढ़ निश्चय शत्रु को निर्मूल करने का चाणक्य में ही हो सकता है। जी हाँ बालकपन में चाणक्य ने ऐसा ही किया था। चाणक्य के पिता चणक ने मगध के सम्राट घनानन्द को कहा कि आप सुरा–सुंदरी, भोग–विलास, मौज–मस्ती में ही डूबे रहते हैं अपनी प्रजा की भी कुछ सुध ले लिया करें। घनानन्द ने इतनी बात पर ही चणक को दरबार में ही मौत के घाट उतार दिया था। चाणक्य ने इसका विरोध किया तो उसे धक्के मारकर दरबार से बाहर निकाल दिया, धक्का–मुक्की में चाणक्य की शिखा खुल गयी। चाणक्य ने प्रतिज्ञा कर ली थी कि अब यह शिखा तभी बंधेगी जब कुशा की तरह घनानन्द का भी नाश कर दूंगा और हुआ ऐसा ही, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को तैयार किया। एक दिन चाणक्य की कूटनीति और चन्द्रगुप्त की ताकत ने नंदवंश को समूल नष्ट कर दिया था।

परंतु आज तो न चाणक्य है नहीं चन्द्रगुप्त जैसा योद्धा, परिस्थिति भी बदल चुकी है, फिर आप किस–किस की जड़ में मठ्ठा डालेंगे। यहां कोई एक कुशा थोड़े ही है आज तो कुशा के बाग उग आये हैं। यदि आज आप किसी भ्रष्टाचारी–दुराचारी के विरूद्ध कोई आवाज उठाते हैं तो निश्चित रूप से आप बहादुरी का काम करते हैं। परंतु यह जरूरी नहीं कि उस दुष्ट भ्रष्टाचारी को कोई सजा मिले ही, हाँ यह अवश्य है कि आपके जीवन में जरूर अशान्ति आ जायेगी। वह उल्टा आप पर भी प्रहार कर सकता है। कानून आपकी मदद करे या पुलिस आपको सुरक्षा दे इसमें संशय है।

बीच बाजार एक लुटेरा एक स्त्री का पर्स छीनकर भागता है बहादुरी दिखाते हुए एक आदमी उसे पकड़ने के लिए दौड़ता है, लुटेरा उसे चाकू मारकर फिर भागता है, जैसे–तैसे लोग उसे पकड़कर पुलिस के हवाले कर देते हैं। पुलिस पूछताछ कर ही रही होती है कि कुछ प्रभावशाली लोग वहां पहुँचते हैं और कहते हैं कि इसे छोड़ दो यह हमारा आदमी है, बहुत ईमानदार है, मजदूरी करता है और अपने बच्चे पालता है यह लुटेरा नहीं है, जरूर लोगों ने कोई षड़यंत्र रचा है यह दूसरी जाति और संप्रदाय का है इसलिए लोगों ने इसे झूठे केस में फँसाया है। ये प्रभावशाली लोग उसे छुड़ाने में कामयाब हो जाते हैं। स्त्री का पर्स भी नहीं मिला, जिसको चाकू मारा था उसका जख्म अभी ठीक भी नहीं हुआ ओर लुटेरा सीना ताने गली में घूमता है। क्या आप इनकी जड़ में मठ्ठा डाल सकते हैं ?

एक आदमी शराब पीकर गाड़ी चलाता है। सड़क पर तीन जिन्दगी कुचल देता है। पकड़ा जाता है तो ऊँची पहुँच के कारण जल्दी छूट जाता है। एक राशन विक्रेता ब्लैक में राशन का अनाज बेचता है, खरीदने वाला ऊँचे दाम पर व्यापारी को या बाजार में बेच देता है, पैसा कमाता है यदि पकड़ा जाता है तो पैसे के बल पर जल्दी छूट जाता है। गरीबों को राशन मिले या न मिले।

एक फल व सब्जी उगाने वाला इन्जैक्शन का प्रयोग कर अधिक सब्जी व फल उगाता है अधिक लाभ कमाता है सब्जी व फल खाने वाले बीमार होते रहते हैं। दूध वाला नकली दूध बनाकर बेचता रहता है पीने वाले बीमार होकर मरते रहते हैं।

एक धनी फैक्ट्री में बिजली चोरी करता है, छापा पड़ता है फैक्ट्री सीज हो जाती है 50 लाख की बिजली चोरी सिद्ध होती है, कनैक्शन काट दिया जाता है। कुछ पैसा खर्च करता है कनैक्शन जुड़ जाता है। फैक्ट्री पूर्ववत् चलती है, देश को घाटा होता है, किसी को चिंता नहीं।

एक दहेज लोभी दहेज न मिलने के कारण पत्नी को जिन्दा जला देता है या जलने, फांसी लगाकर मरने, जहर खाने पर मजबूर कर देता है। अबला बेचारी मर जाती है। वधु पक्ष के लोग पुलिस में जाते हैं। दहेज लोभी जेल जाता है। सास–ससुर भी जेल जाते हैं। कुछ महीनों बाद समझौता होता है जेल से छूट जाते हैं। दहेज लोभी फिर शादी रचा लेता है। अबलाएं मरती रहती हैं।

कुछ लोग चुनाव लड़ते हैं, हारते हैं फिर लड़ते हैं यदि जीत जाते है तो घोटाले कर करोड़ों इकट्ठा करते हैं घोटालों का पर्दाफाश होता है पकड़े जाते हैं मुकद्मा चलता है। ऊँची पहुँच के कारण सम्मान पूर्वक जेल जाते हैं। छूट जाते हैं। देश का धन घोटालों की भेंट चढ़ जाता है।

नदी पर पुल बनता है ठेकेदार और अधिकारी मिलकर कमीशन खाते हैं कच्ची सामग्री लगाई जाती है पुल टूटता है नदी में बहता है साथ में छः आदमी भी नदी में बह जाते हैं। देश का धन जो पुल में लगा वह नदी में बह जाता है। जाँच होती है। कारण कोई और बताकर दोनों को बहाल कर दिया जाता है।

आकस्मिक सेवाएं उपलब्ध हैं अस्पताल में एक मरीज आता है रात में परिवार के लोग लेकर आते हैं डॉक्टर रात में टेंसन नहीं लेना चाहता। रोगी की जान को खतरा बताकर हायर सेंटर रैफर कर देता है। परिवार वाले हायर सेंटर चल देते है। रास्ते में रोगी मर जाता है। परिवार वाले रोते–बिलखते घर ले आते हैं। देश में दवाई बहुत हैं, डॉक्टर बहुत हैं अस्पताल बहुत हैं, परंतु रोगी को ठीक करने की भावना, कहाँ से आये, कौन टेंसन ले।

क्या आप इन अपराधियों की जड़ में मठ्ठा डाल सकते हैं। जी नहीं। जब राष्ट्र की सर्वोच्च सत्ता 'संसद' पर हमला करने वालों को फांसी नहीं दी जा सकती तो इन अपराधियों को आप क्या सजा दे सकते हैं। आजकल तो जेल अपराधियों के लिए सुरक्षित सैरगाह बन गई है वहीं रहते हुए अपने गिरोह बना लेते हैं सभी सुविधा मुहैया है जेल में उनके लिए कोई राष्ट्र भक्त जेलर यदि विरोध करता है तो उसे भी मौत के घाट उतार दिया जाता है।

क्या आप सोच सकते हैं कि हमेशा ऐसे ही चलता रहेगा। जी नहीं, यह संसार बहुत व्यवस्थित तरीके से बना है यहां सब कुछ नियमबद्ध है, प्रकृति नियम सापेक्ष है निरपेक्ष नहीं, परिवर्तन होगा और भयंकर परिवर्तन होगा, आम आदमी की सोच बदलेगी, जागृति आयेगी, ईश्वर भक्ति के साथ–साथ देश भक्ति भी जागेगी यही जनता एक दिन अपराधियों, गुन्डों भ्रष्टाचारियों, घोटाले करने वालों की जड़ में मठ्ठा डालेगी। भारत गुलाम था गरीब था। गुलामी गई आजादी मिली गरीबी कम हुई खुशहाली आयी, देश का धन भी देश में आयेगा। भारत फिर विश्व गुरू बनेगा। बस धैर्य रखिए। अपने विचार पवित्र रखिए और कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहिए।